अध्याय 16

जंगल में कोई भोजन नहीं है

अध्याय 16 में दूसरे अवसर की घटना है जब इस्राएलियों ने जंगल में बकबक की और जब दूसरी बार परमेश्वर ने उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया। मारा में (15:22-25) उन्होंने शिकायत की क्योंकि वहाँ पर पानी खारा था; सीन के जंगल में (अध्याय 16), उन्होंने भोजन की कमी के लिए शिकायत की।

इस्राएलियों के मिस्र से निकलने के एक महीने बाद वे सीन नामक जंगल में आए; वहाँ उन्होंने बकबक की क्योंकि उनके पास पर्याप्त भोजन नहीं था (16:1, 2)। उन्होंने पीछे मुड़कर मिस्र के अपने पुराने दिनों को बड़ी लालसा से स्मरण किया जब उनके पास पर्याप्त भोजन था (16:3)।

परमेश्वर ने मूसा को यह कहते हुए उनकी शिकायतों का प्रत्युत्तर दिया कि वह लोगों को "आकाश से भोजनवस्तु" (16:4) उपलब्ध करवाएगा। उन्हें यह भोजन प्रत्येक भोर के समय एकत्रित करना होगा जो कि उस दिन के लिए ही हो (16:4), परन्तु छठवें दिन उन्हें दो दिन का भोजन एकत्रित करना होगा (16:5)।

मूसा और हारून ने लोगों को एकत्रित किया और परमेश्वर की योजना उन्हें समझा दी (16:6-8)। परमेश्वर ने यह घोषणा की कि वह लोगों को माँस और रोटी उपलब्ध करवाएगा (16:9-12)।

बटेरों के रुप में माँस आया जबकि बटेरें साँझ के समय आकर सारी छावनी पर बैठ गई (16:13)। सातवें दिन को छोड़ प्रत्येक भोर को भोजन उपलब्ध हो जाता था। लोगों ने इसे "मन्ना" नाम दिया, जिसका अर्थ "क्या" है? छठवें दिन को जो मन्ना एकत्रित किया जाता था और वह दो दिन तक ताज़ा रहता था जबकि अन्य दिन यह मात्र एक दिन के लिए ही ताज़ा रहता था (16:13-26)। सातवें दिन अर्थात सब्त के दिन भोजन एकत्रित करने के लिए इस्राएल को मनाही थी क्योंकि इसे पवित्र दिन के रुप में घोषित किया हुआ था और यह विश्राम का दिन बन गया था (16:22-30)। जिस प्रकार परमेश्वर ने निर्देश दिए, मूसा ने हारून से ऐसा करवाया कि वह इसमें से ओमेर भर मन्ना रख छोड़े जिसे "साक्षी के सन्दूक" (16:31-34) के आगे धर दे। इस्राएलियों ने जंगल में पूरे चालीस वर्ष तक मन्ना खाया (16:35, 36)।

इस्राएलियों का बकबक करना (16:1-3)

1फिर एलीम से कूच करके इस्राएलियों की सारी मण्डली, मिस्र देश से

निकलने के बाद दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन को, सीन नामक जंगल में, जो एलीम और सीनै पर्वत के बीच में है, आ पहुँची। 2जंगल में इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा और हारून के विरुद्ध बकबक करने लगी। 3इस्राएली उनसे कहने लगे, "जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियों के पास बैठकर मनमाना भोजन करते थे, तब यदि हम यहोवा के हाथ से मार डाले भी जाते तो उत्तम वही था; पर तुम हम को इस जंगल में इसलिये निकाल ले आए हो कि इस सारे समाज को भूखों मार डालो।"

आयत 1. एलीम से कूच करने के बाद, इस्राएलियों की सारी मण्डली **सीन नामक जंगल में पहुंची**। इस क्षेत्र की सटीक स्थिति निश्चित नहीं है।[1] इब्रानी नाम वैसे तो एक समान हैं फ़िर भी "सीन नामक जंगल," सीनै पर्वत नहीं है। इस्राएलियों की सारी मण्डली **मिस्र** देश से निकलने के बाद **दूसरे महीने के पंद्रहवें दिन** को वहाँ पहुँची। यह अनुमान लगाने पर कि पहले महीने के चौदहवें दिन (12:2, 6, 12) की शाम के समय अन्तिम महामारी और फ़सह घटित हुआ, मिस्र से उनके निकलने के समय से एक महीना बीत चुका था। उस समय का अधिक भाग सम्भावित रुप से एलीम में ही बीत गया, और हो सकता है कि सीन नामक जंगल में पहुँचने से पहले उन्होंने और भी अन्य स्थानों पर ठहराव लिए हों (देखें गिनती 33:11-14)।

आयत 2. जब इस्राएलियों को भोजन की कमी हुई तो उन्होंने **मूसा और हारून के विरुद्ध बकबक की**। एक लम्बी यात्रा के लिए जो भोजनवस्तु वे लोग लेकर आए थे वह पर्याप्त नहीं थी। उनके पास पशु थे परन्तु अच्छी प्रकार से जनने वाले अपने पशुओं को वे मारकर खा नहीं सके। एक बल के साथ यह देखा जा सकता है कि **सारी मंडली** ने इस बकबक में भाग लिया; ऊपरी तौर पर, मात्र उनके अगुवे ही शिकायत नहीं कर रहे थे परन्तु सब जन शिकायत कर रहे थे। उनके भोजन की कमी के लिए उन्होंने मूसा और हारून को ज़िम्मेदार ठहराया। जिस समय भूख को समझा जा सकता है, भूख के प्रति लोगों कि शिकायत एक स्वीकृत सामान्य व्यवहार की सीमा से भी परे चली गई।

आयत 3. इस्राएलियों की मंडली ने फ़िर से यह दावा किया कि जंगल में मरने की अपेक्षा **मिस्र** में रहना अच्छा था (देखें 14:11, 12)। उन्होंने यह तर्क दिया कि पीछे मिस्र में पर्याप्त भोजनवस्तु थी: **"जब हम मिस्र देश में मांस की हांडियों के पास ... मनमाना भोजन करते थे।"** बाद के एक अवसर पर इस्राएलियों की भीड़ ने यह भी शिकायत की कि वे अब भोजन में कोई आनन्द नहीं पाते जैसा वे मिस्र में: अर्थात मछली खीरे, खरबूजे, गन्दने, प्याज, और लहसुन (गिनती 11:5) को खाते समय महसूस करते थे।

लोगों की **भूख** ने ऊपरी तौर पर गुलामी की याद को धूँधला कर दिया, उनके छुटकारे को भुला दिया और उनके हृदय से धन्यवाद के भाव को साफ़ कर दिया। परिणामस्वरूप उन्होंने मूसा और हारून पर यह दोष लगाया कि वे उन्हें **मार** डालने के लिए **जंगल** में ले आए। परमेश्वर ने जो अद्‌भुत काम किए थे उनके बाद भी लोग परमेश्वर में भरोसा करने में असफ़ल रहे कि वह उनकी आवश्यकताओं के लिए उपलब्ध करवाएगा।

भोजनवस्तु के लिए परमेश्वर का वायदा (16:4-8)

4तब यहोवा ने मूसा से कहा, "देखो, मैं तुम लोगों के लिये आकाश से भोजनवस्तु बरसाऊँगा; और ये लोग प्रतिदिन बाहर जाकर प्रतिदिन का भोजन इकट्ठा करेंगे, इससे मैं उनकी परीक्षा करूँगा कि ये मेरी व्यवस्था पर चलेंगे कि नहीं। 5और ऐसा होगा कि छठवें दिन वह भोजन अन्य दिनों से दूना होगा, इसलिये जो कुछ वे उस दिन बटोरें उसे तैयार कर रखें।" 6तब मूसा और हारून ने सारे इस्राएलियों से कहा, "साँझ को तुम जान लोगे कि जो तुम को मिस्र देश से निकाल ले आया है वह यहोवा है, 7और भोर को तुम्हें यहोवा का तेज देख पड़ेगा, क्योंकि तुम जो यहोवा पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं कि तुम हम पर बुड़बुड़ाते हो।" 8फिर मूसा ने कहा, "यह तब होगा जब यहोवा साँझ को तुम्हें खाने के लिये मांस और भोर को रोटी मनमाने देगा; क्योंकि तुम जो उस पर बुड़बुड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हम क्या हैं? तुम्हारा बुड़बुड़ाना हम पर नहीं यहोवा ही पर होता है।"

आयतें 4, 5. यहोवा परमेश्वर ने लोगों की शिकायतों को सुना और जैसा कि वे दण्ड के अधिकारी थे, उन्हें दण्ड देने के स्थान पर उनके लिए भोजनवस्तु उपलब्ध की। पीटर एन्स ने मूसा और हारून के विरुद्ध लोगों के दोषों की मूर्खता पर टिप्पणी की और कहा, "चौंकाने वाली एक मात्र बात सम्भावित रुप से यह है कि परमेश्वर प्रत्युत्तर देता है। उन्हें दण्ड देने के स्थान पर उसने उन्हें आकाश से भोजनवस्तु दी (आयत 4)। अगर पुराना नियम में किसी को परमेश्वर के अनुग्रह को समझने की आवश्यकता है तो उन्हें चाहिए कि वे यहाँ पर देखें!"[2]

परमेश्वर ने **मूसा** से कहा कि वह इस्राएलियों पर **आकाश से भोजनवस्तु बरसाएगा**। तब उनका काम यह होगा कि वे स्वयं के लिए इस भोजनवस्तु को **इकट्ठा** करें। उन्हें यह करना था कि वे प्रत्येक **दिन** के लिए उतना ही इकट्ठा करें जो उस दिन के लिए पर्याप्त हो परन्तु उन्हें **छठवें दिन** दो दिन के लिए इकट्ठा करना था जिससे कि उन्हें सब्त के दिन काम न करना पड़े (16:22-26)।

भोजनवस्तु उपलब्ध करवाने के द्वारा लोगों के लिए यह परमेश्वर की ओर से एक **परीक्षा** थी जिससे कि वह देखे कि वे (उसके) **निर्देशों के अनुसार चलेंगे या नहीं**। क्या वे परमेश्वर पर भरोसा रखेंगे कि वह प्रतिदिन उनके लिए भोजन उपलब्ध करवाएगा अथवा वे एक दिन से अधिक के लिए इकट्ठा करने का प्रयास करेंगे? क्या वे उस पर विश्वास करेंगे कि वह सातवें दिन पर्याप्त भोजनवस्तु उपलब्ध करवाएगा जो सातवें दिन तक चलेगा? जो लोग परमेश्वर के "निर्देश" मानने में असफ़ल रहे उन्होंने यह दिखा दिया कि वे परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते; वे परीक्षा में असफ़ल रहे (16:20, 27)। "निर्देश" के लिए इब्रानी में प्रयोग में लिया गया शब्द תּוֹרָה *(तोरह)* है, जो कि "व्यवस्था" के लिए काम में लिया गया शब्द है। इस कारण यह पद मस्तिष्क में व्यवस्था को लाता है जो कि शीघ्र ही सीनै पर्वत पर इस्राएलियों को दी जाएगी।

आयतें 6-8. मूसा और हारून ने लोगों से बात की और उनसे कहा कि **यहोवा** ने उनकी **बकबक** सुनी है। **साँझ** के समय वे जान लेंगे कि यहोवा उनको **... मिस्र से निकाल लाया**, जब उन्होंने **माँस** प्राप्त कर लिया तब उसने उन्हें उनके मार्ग पर आगे भेज दिया। **साँझ के समय वे यहोवा का तेज देखेंगे**। यह भविष्यद्वाणी सम्भावित रुप से पूरी हो गई होगी जब उन्होंने परमेश्वर के द्वारा उपलब्ध भोजनवस्तु प्राप्त की,[3] अथवा यह सम्भावित रुप से उस समय पूरी हुई होगी जब यहोवा उनको "बादल में" (16:10) दिखलाई दिया होगा। मूसा और हारून के शब्दों में कम-से-कम एक नरम डाँट अथवा चेतावनी शामिल है। उन्होंने यह निश्चित किया कि **इस्राएली** यह जान लें कि जो परमेश्वर उन्हें मिस्र से निकाल लाया था उसने उनकी बकबक सुनी है और उनका असंतोष मात्र मूसा और हारून के विरुद्ध ही नहीं परन्तु परमेश्वर के विरुद्ध भी था (16:18)।

परमेश्वर के तेज का दिखलाई देना (16:9-12)

9फिर मूसा ने हारून से कहा, "इस्राएलियों की सारी मण्डली को आज्ञा दे कि यहोवा के सामने वरन् उसके समीप आए, क्योंकि उसने उनका बुड़बुड़ाना सुना है।" 10और ऐसा हुआ कि जब हारून इस्राएलियों की सारी मण्डली से ऐसी ही बातें कर रहा था कि उन्होंने जंगल की ओर दृष्टि करके देखा, और उनको यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया। 11तब यहोवा ने मूसा से कहा, 12"इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना मैं ने सुना है; उनसे कह दे कि गोधूलि के समय तुम मांस खाओगे और भोर को तुम रोटी से तृप्त हो जाओगे; और तुम यह जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

आयतें 9, 10. उसी समय अथवा अन्य समय ("भोर के समय") में एकत्रित मंडली में **मूसा** ने **हारून** को निर्देश दिया कि वह लोगों से कहे कि **वे यहोवा के समीप आएँ**। जब वे उसके समीप आए तब **यहोवा का तेज बादल में दिखलाई दिया** और स्वयं यहोवा ने उनसे बातें की।

बादल में यहोवा का तेज प्रकट होना आगे और पीछे की ओर देखता है। पीछे देखने के द्वारा यह इस सच्चाई को बताता है कि यहोवा बादल में इस्राएल के आगे-आगे चला (13:21, 22; 14:19)। आगे देखने पर यह "गहरे बादल" (19:16; 20:21) में सीनै पर्वत पर परमेश्वर के दिखलाई देने पर और सम्पूर्ण तम्बू (40:34-38) में बादल में उसकी उपस्थिति पर पूर्व में अनुमान लगाता है। निर्गमन 16 में लोगों के सम्मुख परमेश्वर का दिखलाई देना इसलिए रहा होगा कि इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा को मानने के महत्व के लिए प्रभावित किया जाए। यह सम्भावित रुप से इसलिए होगा कि मूसा और हारून के अधिकार को लोगों के सम्मुख प्रमाणित किया जाए जिन्होंने उनके विरुद्ध शिकायत की।[4]

आयत 11. हालांकि **यहोवा ने मूसा से बात की**, यहाँ पर पाठ्य एक अधिक अच्छा अर्थ प्रदान करते हुए देखा जा सकता है अगर इसे इस अर्थ में समझा जाए

कि इस अवसर पर जब "यहोवा का तेज दिखलाई दिया" तब यहोवा के शब्द सब लोगों के द्वारा सुने जा सकते थे। इस प्रकार की व्याख्या निम्नलिखित घटनाओं के क्रम को स्वीकृति देगी: (1) लोगों ने बकबक की (16:2, 3)। (2) यहोवा ने मूसा को मन्ना (16:4, 5) के बारे में निर्देश देने के लिए उससे अकेले में बात की। (3) मूसा और हारून ने इस्राएलियों की मंडली को एकत्रित किया और उनसे बात की (16:6-8)। (4) जब मंडली एकत्रित हो गई अथवा बाद की सभा में मूसा ने हारून से कहा कि वह लोगों को "यहोवा के सामने ले आए" (16:9)। (5) इस बिन्दु पर यहोवा लोगों को बादल में दिखलाई दिया (16:10)। (6) यहोवा ने लोगों के लाभ के लिए मूसा से इस प्रकार बात की कि वे उसे सुन सकें (16:11, 12)।

आयत 12. मूसा के लिए परमेश्वर का सन्देश - और मूसा के द्वारा लोगों को सन्देश का दिया जाना - इसलिए था कि यह बताया जा सके कि इस्राएल के लिए परमेश्वर के द्वारा उपलब्ध की गई भोजनवस्तु (**माँस** और **भोजनवस्तु**) उसी प्रकार कमियों को पूरा करेगी जैसा कि महामारियों के द्वारा विचार रखा गया था: लोग **यह जान लें** कि (परमेश्वर) ही **यहोवा परमेश्वर है**। फ़िर से इन शब्दों में सम्भावित रुप से एक अस्पष्ट डाँट हो सकती है। अब तक लोगों को परमेश्वर को "जान" लेना चाहिए था; उन्हें यह महसूस कर लेना चाहिए था कि यहोवा निरन्तर अपने लोगों के लिए उपलब्ध करवाएगा और उनकी शिकायत विश्वास की कमी दिखा रही था।

बटेरें और मन्ना (16:13-21)

13तब ऐसा हुआ कि साँझ को बटेरें आकर सारी छावनी पर बैठ गईं; और भोर को छावनी के चारों ओर ओस पड़ी। 14और जब ओस सूख चढ़ गई तो वे क्या देखते हैं कि जंगल की भूमि पर छोटे छोटे छिलके पाले के किनकों के समान पड़े हैं। 15यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, वे आपस में कहने लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उनसे कहा, "यह वही भोजनवस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है। 16जो आज्ञा यहोवा ने दी है वह यह है: तुम उसमें से अपनी आवश्यकता के अनुसार खाने के लिये बटोरा करना, अर्थात् अपने अपने प्राणियों की गिनती के अनुसार, प्रति मनुष्य के पीछे एक एक ओमेर बटोरना; जिसके डेरे में जितने हों वह उन्हीं के लिये बटोरा करे।" 17और इस्राएलियों ने वैसा ही किया; और किसी ने अधिक, और किसी ने थोड़ा बटोर लिया। 18जब उन्होंने उसको ओमेर से नापा, तब जिसके पास अधिक था उसके कुछ अधिक न रह गया, और जिसके पास थोड़ा था उसको कुछ घटी न हुई क्योंकि एक एक मनुष्य ने अपने खाने योग्य ही बटोर लिया था। 19फिर मूसा ने उनसे कहा, "कोई इसमें से कुछ सबेरे तक न रख छोड़े।" 20तौभी उन्होंने मूसा की बात न मानी; इसलिये जब किसी किसी मनुष्य ने उसमें से कुछ सबेरे तक रख छोड़ा, तो उसमें कीड़े पड़ गए और वह बसाने लगा; तब मूसा उन पर क्रोधित हुआ। 21वे भोर को प्रतिदिन अपनी आवश्यकता के अनुसार खाने के लिये बटोर लेते थे, और जब धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था।

आयतें 13, 14. बाद में परमेश्वर ने इस्राएल से कहा था कि वह शाम को मांस के साथ और सुबह रोटी के साथ उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा, उसने बटेरें भेजकर अपना वायदा पूरा करना शुरू किया। बटेरें अपेक्षाकृत कहानी का एक छोटा हिस्सा है। इस विवरण में उनके बारे में बताने के लिये केवल आधे आयत का प्रयोग किया गया है, जबकि रोटी जो "मन्ना" (16:31) कहलाता था, के बारे में विवरण देने के लिये शेष अध्याय (लगभग तेईस आयतों) का उपयोग किया गया है। बटेर की आपूर्ति मन्ना से अलग था। स्पष्ट है कि, जंगल में भटकने के दौरान इस्राएलियों के लिये बटेरों को प्रदान नहीं कराया गया था[5], परन्तु जब तक इस्राएल कनान की सीमा तक नहीं पहुँचे तब तक मन्ना नियमित रूप से प्रकट होता रहा (16:35)।

टीकाकार कभी-कभी बटेरों के इस्राएल के पर्व के लिये एक वास्तविक व्याख्या का सुझाव देते हैं। सीनै प्रायद्वीप पर वर्ष के इस समय में बड़ी संख्या में प्रवासी बटेर पक्षियों को पकड़ना आसान होता था।[6] परन्तु, इस घटना का प्राकृतिक पहलू हो भी हो सकता है, इस्राएली लोगों को खिलाने के लिये आवश्यक बटेर की संख्या और घटना के महत्वपूर्ण समय ने यह स्पष्ट किया कि अपने लोगों के लिये बटेर प्रदान करना परमेश्वर का कार्य था।

बटेर का उल्लेख करने के बाद, अध्याय में रोटी का वर्णन आता है। रोटी का वर्णन **छावनी के चारों ओर ओस पड़ी** होने के रूप में किया गया है, बाद में **ओस** जो **सूख गई** हो, **छोटे छोटे छिलके पाले के किनकों के समान पड़े** हुए हों। इसके बाद, "धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था" (16:31) के रूप में वर्णित किया गया है। इस पदार्थ को पकाया जा सकता था (16:23)। गिनती 11:7, 8 इस जानकारी को जोड़ता है:

> मन्ना तो धनिये के समान था, और उसका रंग रूप मोती का सा था। लोग ... और चक्की में पीसते या ओखली में कूटते थे, फिर तसले में पकाते, और उसके फुलके बनाते थे; और उसका स्वाद तेल में बने हुए पूए के समान था।

यदि जिस दिन यह इकट्ठा किया जाता था, परन्तु उसी दिन खाया या उपयोग में नहीं लाया जाता था, तो उसमें "कीड़े पड़ जाते और वह बसाने लगता था" (16:20)। यदि उसे पहले इकट्ठा नहीं किया जाता था तो "धूप कड़ी होती थी, तब वह गल जाता था" (16:21)। भजन संहिता 78:24, 25 में, इसे "स्वर्ग का अन्न" और "स्वर्गदूतों की रोटी" कहा जाता है। भजन संहिता 105:40 में इसे "स्वर्ग की रोटी" कहा जाता है (देखें नहेम्य. 9:15)।

आयत 15. स्पष्ट है कि मन्ना कुछ ऐसी वस्तु थी, जिसे इस्राएलियों ने पहले नहीं देखा था: जब उन्होंने इसे देखा, तो वे एक-दूसरे से पूछने लगे, **"यह क्या है?"** (מָן הוּא, *मन ह्*)। परिणामस्वरूप, उन्होंने इसका नाम "मन्ना" (מָן, *मन)* रखा, जिसका अर्थ है "[यह] क्या है?"[7] (अंग्रेजी वर्तनी यूनानी शब्द μάννα *[मन्ना]* का एक लिप्यंतरण है।) आर. एलन कोल ने इस शब्द को अर्थ के रूप में समझाया "इसका नाम क्या है।"[8] मूसा ने लोगों से कहा था कि यह **रोटी** थी **जिसे परमेश्वर**

ने उन्हें दिया था।

विद्वानों ने मन्ना के लिये एक प्राकृतिक स्पष्टीकरण खोज लिया है, ये या तो उन कीड़ों द्वारा उत्पादित पदार्थ में जो कि झाऊ के पेड़ पर पाए जाते हैं या चट्टानों पर बढ़ने वाले एक प्रकार का काई या शैवाल जो सीनै प्रायद्वीप में मिलता है।[9] परन्तु, स्वाभाविक रूप से पाया जाने वाला चाहे कोई भी पदार्थ को मन्ना कहा गया हो जिसके बारे में बाइबल बताती है, वह परमेश्वर के द्वारा उसके लोगों के लिये प्रदान किया गया था। निम्नलिखित पर विचार करें: (1) इस्राएल को खिलाने के लिये जो मात्रा तैयार किया जाना था, (2) वह नियमित रूप से (चालीस वर्ष तक, एक वर्ष में बावन सप्ताह जिसमें सप्ताह में छः दिन) तैयार किया जाना था, (3) तथ्य यह है कि यह विश्रामदिन को छोड़कर हर दिन उपलब्ध था, और (4) तथ्य यह है कि जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा की भूमि में पहुँचे तब इसको दिया जाना बन्द हो गया। मन्ना का उत्पादन स्पष्ट रूप से पूरी रीति से प्राकृतिक होने के बदले एक अलौकिक घटना थी।[10]

आयत 16. मन्ना का वर्णन करने के अलावा, यह भाग अपने बटोरने और उपभोग से सम्बन्धित तीन नियम प्रदान करता है। पहले नियम से तात्पर्य था कि कितना **बटोरना** था। लोगों को एक दिन के लिये उतना ही बटोरने के लिये कहा गया था - जितना प्रत्येक मनुष्य के लिये एक **ओमेर**, जो $1^{2}/_{3}$ लीटर या लगभग एक किलोग्राम के बराबर होता है।[11]

आयतें 17, 18. इस्राएल ने आज्ञा का पालन किया, परन्तु **किसी ने** आवश्यक मात्रा से अधिक और किसी ने थोड़ा **बटोर लिया**। यह "अनाज्ञाकारिता से नहीं बल्कि इसलिये कि उनकी आवश्यकता थी, अनुमान लगाकर वे कितना भी बटोर सकते थे।"[12] फिर भी, इसका परिणाम यह था कि सब कुछ बिल्कुल पर्याप्त था। लेख बताता है कि शिविर में लोगों की संख्या के अनुसार परमेश्वर द्वारा प्रदान किए जाने वाले मन्ना की कुल मात्रा बिल्कुल सही मात्रा थी। डब्ल्यू. एच. जीस्पन ने कहा, "चमत्कार यह था कि जब ओमेर में इसे नापा गया, तो प्रत्येक मनुष्य के लिये यह मात्रा-बिल्कुल सही था।"[13]

आयतें 19, 20. दूसरा नियम यह मानता था कि वे मन्ना कैसे खा रहे थे: जिस दिन सबेरे वे बटोरते थे, अगले दिन **सबेरे** होने से पहले उन्हें भोजन लेना था। **किसी किसी** मनुष्य ने इस नियम को तोड़ दिया, शायद वे चाहते थे कि कुछ को बचाकर रख छोड़ें, यदि अगले दिन किसी कारण से मन्ना न मिल पाए। जब ऐसा हुआ, तो मन्ना बसाने लगा, और **मूसा** उन मनुष्यों पर **क्रोधित** हुआ जिन्होंने परमेश्वर की निर्देश का पालन नहीं किया था।

आयत 21. तीसरे नियम के लिये मन्ना की एक दैनिक कटाई की आवश्यकता थी। लोग प्रति **भोर** को मन्ना बटोर लेते थे। **यदि धूप कड़ी होने से पहले** वे अपना खाना नहीं बटोर पाते थे, तो वह गल जाता था। इसलिये, यदि वे आलस करते थे और सोचते थे कि मन्ना बटोरने के लिये भोर को उठना बहुत कठिन है, तो उन्हें भूखा रहना पड़ता था (देखें नीति. 6:9-11)।

स्पष्ट है, मन्ना के प्रावधान और इन नियमों को देकर, परमेश्वर न केवल

इस्राएल की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा रखता था, बल्कि अपने लोगों को कई बातों को सिखाना भी चाहता था। उन्हें (1) परमेश्वर पर आश्रित होने और भरोसा रखने (देखें व्यव. 8:3), (2) अपने देश और प्रत्येक व्यक्ति की भलाई के लिये उसकी आज्ञा मानने, और (3) नियमित और कड़ी मेहनत के महत्व की सराहना करने की आवश्यकता थी।

सब्त के दिन विश्राम करना (16:22-30)

22फिर ऐसा हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना, अर्थात् प्रति मनुष्य के पीछे दो दो ओमेर बटोर लिया, और मण्डली के सब प्रधानों ने आकर मूसा को बता दिया। 23उसने उनसे कहा, "यह वही बात है जो यहोवा ने कही, क्योंकि कल परमविश्राम, अर्थात् यहोवा के लिये पवित्र विश्राम होगा, इसलिये तुम्हें जो तन्दूर में पकाना हो उसे पकाओ, और जो सिझाना हो उसे सिझाओ, और इसमें से जितना बचे उसे सबेरे के लिये रख छोड़ो।" 24जब उन्होंने उसको मूसा की इस आज्ञा के अनुसार सबेरे तक रख छोड़ा, तब न तो वह बसाया, और न उसमें कीड़े पड़े। 25तब मूसा ने कहा, "आज उसी को खाओ, क्योंकि आज यहोवा का विश्रामदिन है; इसलिये आज तुम को वह मैदान में न मिलेगा। 26छः दिन उसे बटोरा करोगे परन्तु सातवाँ दिन विश्राम का दिन है, उसमें वह न मिलेगा।" 27तौभी लोगों में से कोई कोई सातवें दिन भी बटोरने के लिये बाहर गए, परन्तु उनको कुछ न मिला। 28तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे? 29देखो, यहोवा ने जो तुम को विश्राम का दिन दिया है, इसी कारण वह छठवें दिन को दो दिन का भोजन तुम्हें देता है; इसलिये तुम अपने अपने यहाँ बैठे रहना, सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।" 30अतः लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया।

आयतें 22, 23. मन्ना के बारे में एक अन्य नियम दूसरों से अधिक महत्वपूर्ण था: सब्त का नियम। **छठवें दिन** [लोगों ने दूना]**, अर्थात् प्रति** [मनुष्य] **के पीछे दो दो ओमेर बटोर लिया**। दिए गए मन्ना को न केवल उसी दिन खाने के लिये दिया जाता था बल्कि अगले दिन के खाने के लिये भी मन्ना को अलग कर दिया जाता था। परमेश्वर ने ये व्यवस्था मन्ना को सड़ने से बचाने के लिये दिया था, जब छठवें दिन उसे बटोरा जाता था और रात भर रखा जाता था।[14] इसके अलावा, उसने सातवें दिन कोई मन्ना नहीं दिया, ताकि कोई भी सब्त के कानून को तोड़ने की इच्छा न करे।

मण्डली के सब प्रधान मूसा के पास आए और उन्होंने बताया कि लोग पहले की तरह दूना रोटी बटोर रहे थे जितना वे पहले बटोरा करते थे। जॉन आई. डरहम ने सुझाव दिया कि ये लोग इसलिये चिन्तित थे क्योंकि लोगों को एक ओमेर से अधिक की आवश्यकता हो सकती थी। प्रति उत्तर में, मूसा ने उन्हें आश्वस्त किया कि छठवें दिन मन्ना की मात्रा दूना बटोरना परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था।[15]

पवित्रशास्त्र में सब्त का वर्णन यहाँ पर पहली बार हुआ है, यद्यपि इसका एक संकेत आयत 5 में देखा गया है। यह **परमविश्राम, यहोवा के लिये पवित्र विश्राम** कहा जाता है, "यहोवा का विश्रामदिन है" (16:25), और "सातवाँ दिन विश्राम का दिन है" (16:26)। शब्द "सब्त" (שַׁבָּת, *शब्बथ)* क्रिया שָׁבַת *(शबथ)* से जुड़ा है, जिसका अर्थ है "रोकना" या "विश्राम करना"; सब्त का दिन इस्राएलियों के लिये विश्राम का दिन बन गया। सातवें दिन की तैयारी में, इस्राएलियों को आज्ञा दिया गया था कि वे छठवें दिन अपने भोजन को **पकाएँ** या **उबाल लें** और रात भर रख छोड़ें।

कुछ लोग मानते हैं कि सब्त का दिन एक निरन्तर अध्यादेश है, जो उत्पत्ति के दिनों से वर्तमान समय तक है। यद्यपि इसकी प्रस्तुति सृष्टि पर आधारित था (20:11; उत्पत्ति 2:3), पुराना नियम में निर्गमन 16 से पहले विश्रामदिन को मानने वाले किसी भी व्यक्ति का कोई उदाहरण नहीं है। इस अध्याय में, इसकी विधि सब्त आज्ञाओं का अनुकरण करता है, निर्गमन 20:8-11 में दस आज्ञाओं का हिस्सा, जैसा कि निर्गमन 15:25, 26 में वाचा का प्रारम्भिक कथन, निर्गमन 19 में दिए गए वाचा के अनुसार आगे ले जाने का काम करता है। इसके अलावा, सब्त को मनाना इस्राएल को मिस्र के बंधन से छुटकारा दिलाने में सहायता करने को स्मरण कराने के लिये स्थापित किया गया था (व्यव. 5:15)।

आयत 24. लोग विश्रामदिन के पहले अपने भोजन को तैयार करके और रात को इसे बचाकर रख छोड़ने के लिये **मूसा** की आज्ञा मानते थे। **उन्होंने उसको सबेरे तक रख छोड़ा,** और वह खराब नहीं हुआ: **तब न तो वह बसाया, और न उसमें कीड़े पड़े।** इससे पहले, भोजन खराब हो गया था जब इस्राएलियों ने रात भर इसे बचाकर रख छोड़ने पर मूसा के आदेश का उल्लंघन किया था (16:20)। इसलिये, परमेश्वर ने अपने निर्देशों के अनुसार विश्रामदिन पर ऐसा होने की अनुमति नहीं दी थी (16:5)।

आयतें 25, 26. मूसा ने इस्राएलियों को जो रात को बचाकर रख छोड़ा था उसे **खाने** के लिये कहा। क्योंकि वह दिन **यहोवा के लिये विश्रामदिन** था, लोगों को **मैदान में** [कोई भी मन्ना] **नहीं मिलेगा।** परमेश्वर उस दिन उस चमत्कारी रोटी की आपूर्ति नहीं करने जा रहा था इसलिये उसने उन्हें विश्राम करने की आज्ञा दी। उनके पास उसे बटोरने के लिये **छः दिन** थे, परन्तु **सातवें दिन** उसमें वह न मिलेगा।

आयत 27. जैसा कि नियम के अनुसार कोई भी मन्ना सबेरे तक न रख छोड़ना था (16:19, 20), तौभी **किसी किसी मनुष्य ने** इसे बटोरने से जुड़े विश्रामदिन के नियम को तोड़ना का निश्चय किया। चाहे लोभ में आकर या यहोवा में विश्वास की कमी होने कारण, ये लोग मूसा की सुनना ही नहीं चाहते थे। स्पष्ट है कि, कुछ इस्राएली यहोवा की परीक्षा में खरे नहीं उतर पाए (16:4, 5)। इसमें कोई संदेह नहीं था कि जब वे मन्ना **बटोरने के लिये बाहर गए**, परन्तु उनको कुछ न मिला।

आयत 28. उनके द्वारा आज्ञा का उल्लंघन करने के प्रति उत्तर में, **यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था को कब तक नहीं मानोगे?"** यहोवा ने इस प्रश्न को मूसा को इस्राएल का अगुवा होने के रूप में

निर्देशित किया। परन्तु, यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि इब्रानी क्रिया के अन्त का अनुवाद "तुम" बहुवचन के रूप में है। इस कारण से, कुछ संस्करणों में "तुम लोग" या "ये लोग" पाया जाता है।

आयतें 29, 30. स्पष्ट है कि यहोवा अप्रसन्न था, परन्तु इस मामले में उसने गलत करनेवालों को दण्डित करने का नहीं चुना। इसके बदले, वह लोगों को अपने नियम को तोड़ने के लिये दृढ़ता से दण्ड दिया और उन्हें यह बताने के लिये जोर देकर कहा कि **"सातवें दिन कोई अपने स्थान से बाहर न जाना।"** दूसरे शब्दों में, सप्ताह के सातवें दिन उन्हें मन्ना की खोज या किसी अन्य कारण से डेरा छोड़कर नहीं जाना था। वह यह भी लागू कर सकता था कि प्रत्येक परिवार को "घर पर" रहने के लिये अपने तम्बू के आस - पास ही रहना था। इस आदेश का पालन करते हुए जीना आवश्यक था कि मनुष्य विश्रामदिन काम न करें। वास्तव में, जिस तरह से इस्राएल ने परमेश्वर के नियम को समझ लिया था, इसलिये उन्होंने **सातवें दिन विश्राम किया**।

मन्ना के बारे में नियम में जो कहा गया अस्पष्ट था, जो दस आज्ञाओं में स्पष्ट हो गया जिसे लगभग एक महीने बाद इस्राएल को दिया गया था।[16] परमेश्वर ने लोगों को "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना" (20:8) करके आज्ञा दिया था। उसने विशेष रूप से कहा था कि वे उस दिन को कैसे पवित्र मानते थे या दूसरे दिनों से अलग करते थे: परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है; उसमें न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना (20:10)।

मन्ना को संरक्षित किया गया (16:31-36)

[31]इस्राएल के घराने ने उस वस्तु का नाम मन्ना रखा; और वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था। [32]फिर मूसा ने कहा, "यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है कि इसमें से ओमेर भर अपने वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हमको मिस्र देश से निकालकर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था।" [33]तब मूसा ने हारून से कहा, "एक पात्र लेकर उसमें ओमेर भर लेकर उसे यहोवा के आगे रख दे कि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये रखा रहे।" [34]जैसी आज्ञा यहोवा ने मूसा को दी थी, उसी के अनुसार हारून ने उसको साक्षी के सन्दूक के आगे धर दिया कि वह वहीं रखा रहे। [35]इस्राएली जब तक बसे हुए देश में न पहुँचे तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे; वे जब तक कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे तब तक मन्ना खाते रहे। [36]एक ओमेर तो एपा का दसवाँ भाग है।

आयत 31. लेख पाठक को सूचित करता है कि इस्राएल ने इस रोटी को स्वर्ग का **मन्ना** कहा था (16:15 पर टिप्पणी देखें)। यह एक विवरण भी देता है: **वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पूए का सा था** (16:13, 14 पर टिप्पणी देखें)। "धनिया" पूरे वर्ष मिलने वाली एक औषधि थी

जिसे अपनी सुखद सुगंध के लिये जाना जाता था, और इसका बीज एक मसाला के रूप में उपयोग किया जाता था।

आयत 32. इस बिंदु से, लेख उन घटनाओं के बारे में बताता है जो पहले वर्णित घटनाओं की तुलना में बहुत बाद में हुआ था। यह उन बातों को बताता है जिन्हें **यहोवा** ने **मूसा** से कहा था कि एक वर्ष से अधिक बीत जाने के बाद वह तम्बू के पूरा होने के बाद क्या करे। परमेश्वर ने अपने दास को आज्ञा दी कि इसमें से **ओमेर भर** अपने अपने आने वाले **पीढ़ी** के लिये रख छोड़े, जिससे वे जानें कि वह इस्राएलियों को **जंगल** में कैसी रोटी खिलाता था।

आयतें 33, 34. मूसा ने हारून को बताया कि मन्ना के **पात्र** को **यहोवा के आगे** रखा जाना था। उसी के अनुसार हारून ने उसको **साक्षी के सन्दूक के आगे** धर दिया। "साक्षी का सन्दूक" व्यवस्था की तख्तियों का एक संदर्भ है (31:18; 32:15; 34:29) जिसे "वाचा के सन्दूक" में रखा गया था, जो कि निवासस्थान के भीतर के कक्ष में रखा गया था। इसमें रखे गए तख्तियों के कारण (25:16) सन्दूक को "साक्षी के सन्दूक" के रूप में भी जाना जाता था (25:22; 26:33)। तम्बू के निर्माण के बाद मन्ना के पात्र को सन्दूक में रखा गया था। इब्रानियों 9:4 बताता है कि पात्र सोने का बना हुआ था, और यह वाचा की तख्तियाँ और हारून की छड़ी जिसमें फूल फल आ गए थे के साथ सन्दूक के अंदर रखा गया।

आयत 35. यह विवरण समय के अनुसार आगे बढ़ जाता है, अगले **चालीस वर्षों** में **मन्ना** के विषय में क्या हुआ, यह बताता है। इस्राएली इन चालीस वर्षों तक जंगल में इस रोटी को खाते रहे, **जब तक वे कनान देश की सीमा तक नहीं पहुँचें**। ये सभी विवरण संकेत देते हैं कि लेखक ने घटनाओं को बाद की तिथि से देखा। परन्तु, क्योंकि यह आयत मन्ना के घटने के बारे में नहीं बताता, इसलिये यह लेख अब भी मूसा द्वारा लिखा गया हो सकता है।[17] जब तक इस्राएली वास्तव में कनान में प्रवेश नहीं किए तब तक मन्ना का मिलना बन्द नहीं हुआ (यहोशू 5:12)।

इस आयत को काव्य शैली में लिखा गया था, क्योंकि इसकी पंक्तियाँ एक ABAB क्रम बनाती हैं:

A1: "इस्राएली चालीस वर्ष तक मन्ना खाते रहे"
  B1: "जब तक वे बसे हुए देश में नहीं पहुँचे;"
A2: "वे मन्ना खाते रहे"
  B2: "जब तक वे कनान देश की सीमा पर नहीं पहुँचे।"

आयत 36. मन्ना की चर्चा का समापन एक **ओमेर एपा का दसवाँ भाग**[18] था की विशेषता बताते हुए करता है। शब्द "ओमेर" का प्रयोग बाइबल के इस अध्याय (16:16, 18, 32, 33, 36) में मिलता है। इस अपरिचित शब्द का तात्पर्य एक छोटे से प्याले या कटोरे से हो सकता है।

अनुप्रयोग

मन्ना से शिक्षा (अध्याय 16)

इस्राएल के जंगल के अनुभव में सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक निर्गमन 16 में पाया जाता है। इस्राएलियों के पास भोजनवस्तु की कमी थी, और परमेश्वर ने मन्ना दिया। कहानी हमें सीखने के लिये कई बातों को प्रस्तुत करती है।

1. *परमेश्वर की आशीषों को स्मरण करें* (16:1-3). लोग "बकबक करने लगे" (16:2); अन्य दो अनुवाद (KJV; NRSV) बताते हैं कि वे "बुड़बुड़ाने" या "शिकायत करने लगे।" उन्होंने इस संदर्भ में आठ बार "बकबक की" (16:2, 7, 8, 9, 12)! यह न तो पहली और न ही अन्तिम बार था जब परमेश्वर के लोगों ने शिकायत की; वे वास्तव में, लगातार शिकायत कर रहे थे। उनके पास वास्तविक आवश्यकता थी, परन्तु शिकायत करना उनके लिये गलत था। उन्होंने शिकायत क्यों की? उनमें भूल जाने, आभार प्रगट न करने और विश्वास में कमी पाई जाती थी। वे भूल गए कि वे बंधुवाई में थे और उन्होंने परमेश्वर की दोहाई दी थी। (मिस्र तब इतना आकर्षक नहीं लगता था!) वे भूल गए कि पहले परमेश्वर ने उनके लिये क्या किया था। उनमें विश्वास की कमी भी पाई जाती थी: वे इस सच्चाई की सराहना करने में असफल रहे कि परमेश्वर जो समुद्र को विभाजित करने में योग्य था ताकि वे सूखी भूमि पर चलकर जा सकें, वह उन्हें एक मरुभूमि में भोजनवस्तु भी प्रदान कर सकता था। वे मूसा और हारून के विरुद्ध में बुड़बुड़ाने लगे, परन्तु उनकी शिकायत वास्तव में परमेश्वर के विरुद्ध थी (16:7, 8)।

हम कम शिकायत करना सीखें। पौलुस ने ऐसे ही लोगों के समूह के बारे में कहा, यद्यपि एक अलग अवसर के बारे में था, "और न [हम] कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए" (1 कुरि. 10:10)। फिलिप्पियों 2:14 कहता है, "सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो।" कभी-कभी, जब मैं किसी से पूछता हूँ कि वह कैसा है, तो वह उत्तर देता है, "मैं शिकायत नहीं कर सकता।" मैं कभी-कभी मजाक में उत्तर देता हूँ, "मैं कर सकता हूँ।" एक व्यक्ति के पास यदि वह चाहे तो शिकायत करने के लिये हमेशा कुछ न कुछ हो सकता है। प्रश्न यह है कि क्या वह शिकायत करने का चुनाव करता है, या परमेश्वर ने जो किया है उसे स्मरण रखना चाहता है, उसका आभार मानना चाहता है, और परमेश्वर पर उसका विश्वास उसे शिकायत करने से रोकता है?

2. *परमेश्वर के प्रयोजनों पर विश्वास* (16:4-16). परमेश्वर ने इस्राएल की आवश्यकताओं की पूर्ति की। उसने भोर को मन्ना और रात में मांस (बटेर) प्रदान किया। उसने शिकायत, विश्वासहीन, भूल जाने, आभार प्रगट न करनेवाले लोगों की इस सच्चाई के बावजूद इस्राएल की सहायता की, जो इस योग्य भी नहीं थे कि उनकी सहायता की जा सके। इस कारण उसने इस्राएल को मन्ना देकर उनकी सहायता की कि वे सीख सके कि "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता,

परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं ..." (व्यव. 8:3)।

आइए हम सीखें कि परमेश्वर अनुग्रह कर हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है, भले ही हम उसके आशीषों के योग्य नहीं होते। यद्यपि हम यह दावा नहीं कर सकते हैं कि हम उसके योग्य ठहरते हैं, फिर भी परमेश्वर भोजन, वस्त्र और निवास जैसी हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह हमें कई प्रकार से आशीष देता है, भले ही हम भूल जाने, आभार प्रगट न करनेवाले और विश्वासहीन हों। क्यों? दयालु, अनुग्रहकारी और अति करुणामय होना उसका स्वभाव है (34:6; 1 यूहन्ना 4:8)।

विशेष रूप से, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता को पूरी करता है - जीवन की रोटी यीशु मसीह के माध्यम से आत्मिक भोजन और जीवन की आवश्यकता है। यीशु ने "स्वर्ग से रोटी" होने का दावा किया, जो अनन्त जीवन देता है। वह ऐसा है जो जंगल में मन्ना नहीं कर सकता (यूहन्ना 6:31-35)।

3. *परमेश्वर की आज्ञा का पालन* (16:16-36). यद्यपि परमेश्वर ने मन्ना प्रदान किया है, लोगों को परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रावधान का लाभ उठाना था। प्रत्येक दिन के भोजन के लिये उन्हें उसकी आज्ञा के अनुसार मन्ना बटोरना था।

परमेश्वर ने विशेष आज्ञा दिए कि कैसे मन्ना बटोरा जाना था। इस्राएलियों को हर दिन एक निश्चित मात्रा में बटोरना होता था, छठवें दिन दो बार, और सातवें दिन कुछ भी नहीं करना होता था। सब्त का दिन विश्राम का दिन था। इस निर्देश ने उनके मेहनत, उनके विश्वास और उनकी निष्ठा की परीक्षा की। क्या वे प्रतिदिन का यह कार्य करने वाले थे? क्या वे परमेश्वर पर भरोसा रखते थे कि वह उन्हें सातवें दिन का भोजनवस्तु छठवें दिन पर्याप्त रूप से दिया करेगा? क्या उन्होंने वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया? किसी किसी ने नहीं किया। जिन लोगों ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन नहीं किया, उन्हें आशीष नहीं मिला।

आइए जानें कि हमें परमेश्वर का वरदान पाने के लिये कार्य करके भी दिखाना चाहिए। उदाहरण के लिये, परमेश्वर हमें भोजन प्रदान करता है, परन्तु यह हमें जीवित रहने के लिये काम करने की जिम्मेदारी से छूटने की आज्ञा नहीं देता है। जब यीशु, जीवन की रोटी, फिलिस्तीनी पहाड़ियों पर जाते थे, जो उसके द्वारा आशीष पाना चाहते थे, जीवन की रोटी का भागी होने लेने के लिये, जहाँ भी वह जाता था वहाँ तक जाना पड़ता था। उन्हें उस पर विश्वास करना था और उसका अनुसरण करना था। आज, यदि हमें अपने जीवन की रोटी पाना है, तो हमें कुछ करना भी चाहिए। हमें "मसीह को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करना" चाहिए, जिस रीति से लोगों ने प्रेरितों के काम 2 में किया था: उसपर विश्वास करने, हमारे पापों के पश्चाताप और पापों की क्षमा के लिये मसीह में बपतिस्मा लेने के द्वारा।

यदि हम परमेश्वर के प्रावधानों से आशीषित होना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना चाहिए। पुराने नियम के समय में, परमेश्वर के नियमों को जानबूझकर पालन न करना यह कभी भी स्वीकार्य नहीं था। हमें यह समझना

चाहिए कि परमेश्वर अभी भी हमें उसकी आज्ञा मानने की आवश्यकता है (मत्ती 7:21; इब्रा. 5:8, 9)। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने में असफल होना अपने आप के लिये उसकी आशीषों से इनकार और उसके दण्ड को आमन्त्रित करना है।

जो प्राचीन समय में लिखा गया था वह हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया था (रोमियों 15:4)। आइए हम मन्ना के विवरण से सीखें। (1) हमें शिकायत नहीं करनी चाहिए और अधन्यवादी और विश्वास की कमी नहीं दिखाना चाहिए। (2) यद्यपि हम इसके योग्य नहीं हैं, फिर भी परमेश्वर हमारे लिये प्रदान करता है और हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है - विशेषकर यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने की हमारी आवश्यकता को। (3) परमेश्वर के उद्धार के प्रावधान का लाभ उठाने के लिये हमें कुछ करना भी चाहिए। (4) हमारे लिये परमेश्वर के आज्ञाओं का पालन अनिवार्य रूप से और पूरी तरह से करना अति महत्वपूर्ण है।

इस्राएल के लिये "आकाश से भोजन वस्तु" - और हमारे लिये भी (16:4, 15; यूहन्ना 6)

परमेश्वर ने मन्ना को "आकाश से भोजन वस्तु" कहा (16:4)। यहोवा ने लोगों को इस रोटी को खाने के लिये दिया। नया नियम के समय में, यहूदियों ने मन्ना को परमेश्वर द्वारा भेजा गया "स्वर्ग से रोटी" के रूप में माना (यूहन्ना 6:31)। यीशु ने कहा था कि वह "स्वर्ग से सच्ची रोटी" (यूहन्ना 6:32) था। उस में जीवन की हमारी रोटी (यूहन्ना 6:35) मन्ना की तरह है (1) वह परमेश्वर से आया था, वैसे ही जैसे परमेश्वर ने मन्ना दिया था। (2) वह मानवता की जरूरतों को पूरा करता है, जैसे मन्ना इस्राएलियों की जरूरतों को पूरा करता है। यद्यपि, यीशु मन्ना से अलग है क्योंकि जो लोग उसके पास आते हैं वे कभी भी भूखे नहीं होंगे (यूहन्ना 6:35)। जो लोग मन्ना खाते थे, वे मर गए, परन्तु जो लोग "स्वर्ग से उतरती रोटी" में से खाते हैं, वे सर्वदा जीवित रहेंगे (यूहन्ना 6:47-51)।

"हमारे प्रतिदिन की रोटी" (16:16-21; मत्ती 6:11)

परमेश्वर का मन्ना का प्रावधान हमें यह समझने में सहायता कर सकता है कि यीशु के कहने क्या अर्थ था, जब उसने कहा कि हमें प्रार्थना करनी चाहिए, "हमारी *दिन भर* की रोटी आज हमें दे" (मत्ती 6:11; वर्णन दिया गया है)। लोगों को अपने भोजन के लिये हर दिन परमेश्वर पर निर्भर होना पड़ता था; भविष्य के लिये मन्ना बटोरने का प्रयत्न करना व्यर्थ था। फिर भी, हमें हर दिन हमारा काम करना चाहिए, विश्वास करते हुए कि परमेश्वर हमारे लिये प्रदान करेगा। हमें हमारे कल की चिन्ता करने के लिये परमेश्वर पर निर्भर होना चाहिए (मत्ती 6:34)।

काम करने की आवश्यकता (16:16)

यहोवा की आवश्यकता कि इस्राएली हर दिन मन्ना इकट्ठा करें, इस तथ्य को दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों से अपेक्षा करता है कि वे जीवित रहने के लिये,

नियमित रूप से और मेहनत से काम करें (इफि. 4:28)। परमेश्वर हमें हर एक अच्छा वरदान देता है (याकूब 1:17), जिसमें हमारी प्रतिदिन की रोटी भी शामिल है; परन्तु हमें इसके लिये अभी भी काम करना है।

समाप्ति नोट्स

[1]डब्ल्यु. एच. जिस्पेन, *एक्सोडस,* ट्रान्स. एड वेन डर मास, बाइबल स्टूडेन्ट्स कमेन्ट्री (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: रिजेन्सी रेफ़रेन्स लाइब्रेरी, जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1982), 155. [2]पीटर एन्स, *एक्सोडस,* द NIV एप्लिकेशन कमेन्ट्री (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 2000), 324. [3]विल्बर फ़ील्ड्स, एक्सप्लोरिंग एक्सोडस, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1976), 345. [4]जिस्पेन, 159. गिनती 16 और 17 में मूसा के अधिकार के विरोध में बलवा करने के साथ इस अवसर की तुलना करें। [5]एक अन्य अवसर, लगभग एक वर्ष बाद, जिस पर परमेश्वर ने बटेरें प्रदान की थी जिसका वर्णन गिनती 11:4-6, 18-23, 31-35 में की गई है। [6]फील्ड्स, 346-47. [7]विद्वानों की विचारपूर्ण चर्चा "मन्ना" नाम की उत्पत्ति और अर्थ के लिये समर्पित है: जैसा कि जॉन जे. डेविस, *मोसेस एण्ड गॉड्स ऑफ इजिप्ट: स्टडीज इन एक्सोडस,* 2ड एड. (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1986), 189-90, एण्ड ब्रेंट ए. स्ट्रॉन, "मन्ना," इन *डिक्शनरी ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटाट्रूक,* एड. टी. डेसमंड अलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटरवर्सेटी प्रेस, 2003), 560. [8]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटर-वर्सेटी प्रेस, 1973), 131. [9]इन बातों का वर्णन एफ. एस. बोडेनहाइमर में किया गया है, "द मन्ना ऑफ सिनाई," *द बिब्लिकल आर्कियोलोजिस्ट* 10 (फरवरी 1947): 2-6, एण्ड नहूम एम. सरना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: दि ओरिजिन्स ऑफ बिब्लिकल इसराएल* (न्यू यॉर्क: स्कोकेन बुक्स, 1996), 117-18. [10]प्राकृतिक" के विरुद्ध तर्क का स्पष्टीकरण जीस्पन, 156-57, और डेविस, 191-93 में दिए गए हैं।

[11]जॉन आई. डरहम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यू. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 225. [12]जीस्पन, 161. [13]उपरोक्त. पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 8:14, 15 में इस लिखित भाग का उपयोग किया। [14]कुछ टिप्पणीकारों का सुझाव है कि मन्ना को पकाना या उबालने से संरक्षित किया गया था (16:23)। जबकि इस्राएलियों को सातवें दिन की तैयारी छठवें दिन में करने के लिये कहा गया था, मन्ना को पकाना उसके संरक्षण की कुंजी नहीं थी। यदि ऐसा होता, तो इस्राएली लोग सप्ताह के किसी भी दिन इसे संरक्षित कर सकते थे। मन्ना का संरक्षण कुछ ऐसा था जो परमेश्वर ने चमत्कारिक रूप से किया था। [15]डरहम, 225. [16]निर्गमन 20:10 में आज्ञा, मन्ना की आवश्यकता अनुसार बढ़ती है क्योंकि यह केवल यह नहीं कहती कि "तू सब्त के दिन मन्ना इकट्ठा न करना"; बल्कि यह कहता है कि, "तू कोई काम न करना।" [17]एन्स का मानना था कि इस अनुच्छेद के मुख्य तत्व से संकेत मिलता है कि मूसा यह नहीं लिख सकता था। (एन्स, 327-28.) [18]एक एपा "लगभग एक से डेढ़ बुशल [बत्तीस सेर का तौल]" के बराबर होता है। (डरहम, 227.)